ओ३म्

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

आर्य्य मार्तण्ड

❖❖ आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक ❖❖

ओ३म्

वैदिक संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष : 89 अंक : 20
(द्वितीय)आषाढ़ शुल्क 5
विक्रम संवत् 2072
कलि संवत् 5116
21 जुलाई से 05 अगस्त, 2015
दयानन्दाब्द : 191
सृष्टि संवत् : 01,96,08,53,116
मुख्य सम्पादक :
डॉ. सुधीर शर्मा – 9314032161
संपादक मंडल :
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजयसिंह भाटी , जोधपुर
आर्य शिरोमणि पं. विनोदी लाल दीक्षित
श्री हरिपाल शास्त्री , अलवर
श्री जगदीश आर्य, जखराणा, अलवर
श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
श्री अर्जुनदेव चड्डा , कोटा
श्रीमती अरूणा सतीजा , जयपुर
श्री सत्यपाल आर्य, अलवर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य , अलवर
श्री अनिल आर्य, जयपुर
प्रकाशक :
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजापार्क, जयपुर ।
दूरभाष : 0141 – 2621879
प्रकाशन : दिनांक 5 व 21
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता :
डॉ. सुधीर शर्मा
सम्पादक, आर्य मार्तण्ड,
42, मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा बाईपास , जयपुर ।
मोबाईल – 9314032161
मुद्रक :
राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशिएट्स , जयपुर
ग्राफिक्स : प्रिण्टपैक, जयपुर ।
ई–मेल : aryamartand@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया
ऑनलाईन प्राप्ति :
www.thearyasamaj.org/aryamart

कारगिल विजय दिवस (26 जुलाई, 1998) पर सभी देशभक्त वीरों को आर्य प्रतिनिधि सभा का सादर नमन ।

नाम : लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक
जन्म : 23 जुलाई, 1856
जन्मस्थान : गाँव – चिखली, जिला– रत्नागिरि, महाराष्ट्र
संस्थापक : दक्खन शिक्षा सोसायटी,
संस्थापक एवं संपादक : मराठा और केसरी समाचार पत्र
संगठन : अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (गरम दल)
बलिदान : 01 अगस्त, 1920, मुम्बई, महाराष्ट्र

नाम : सरदार उधमसिंह
जन्म : 26 दिसम्बर, 1899
जन्मस्थान : संगरूर, पंजाब
आन्दोलन : भारतीय स्वतंत्रता संग्राम
बलिदान : 31 जुलाई, 1940, पेन्टोनविले, ब्रिटेन

नाम : मंगल पाण्डे
जन्म : 19 जुलाई, 1827
जन्मस्थान : नगवा, बालिया, उत्तरप्रदेश
आन्दोलन : प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम (1857)
बलिदान : 08 अप्रैल, 1857 , बराकपुर, कलकत्ता

स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है – मैं इसे लेकर रहूँगा । – लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

वेदामृत

"अथेश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना विषय"

ओ३म्_स्थिरा वः सन्त्वायुधा पराणुदे वीळू उत प्रतिष्कभे ।। युष्माकमस्तु तविषी पनीयसी मा मर्त्यस्य मायिनः ।।

– ऋग्वेद– अ. 19 / अ. 3 / व. 18 / मं. 02 ।।

इषे पिन्वस्वोर्जे पिन्वस्व ब्रह्मणे पिन्वस्व क्षत्राय पिन्वस्व द्यावापृथिवीभ्यां पिन्वस्व । धर्मासि सुधर्मामेन्यस्मे नृम्णानि धारय ब्रह्म क्षत्रं धारय विशं धारय ।।

– यजुर्वेद अ. 38 / मं. 14 ।।

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति । दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।

– यजु0 अ0 34 / मन्त्र 01 ।।

वाजश्च मे प्रसवश्च मे प्रतीतिश्च में धीतिश्च मे क्रतुश्च मे0 ।

– यजुः – अ0 18 ।।

भाषार्थ :

(स्थिरा व0) इस मन्त्र में ईश्वर सब जीवों को आशीर्वाद देता है कि – हे मनुष्यों ! तुम लोग सब काल में उत्तम बल वाले हो। किन्तु तुम्हारे **(आयुधा)** अर्थात् आग्नेयादि अस्त्र और **(शतघ्नी)** तोप, **(भुशुण्डी)** बन्दूक, धनुषबाण और तलवार आदि शस्त्र, सब स्थिर हों, तथा **(पराणुदे)** मेरी कृपा से तुम्हारे अस्त्र और शस्त्र सब दुष्ट शत्रुओं के पराजय करने के योग्य होवें **(वीळू)** तथा वे अत्यन्त दृढ़ और प्रशंसा करने के योग्य होवें (उत प्रतिष्कभे) अर्थात् तुम्हारे अस्त्र और शस्त्र सब दुष्ट शत्रुओं की सेना के वेग थांभने के लिए प्रबल हों तथा **(युष्माकमस्तु)** हे मनुष्यों ! तुम्हारी **(तविषी0)** अर्थात् सेना अत्यंत प्रशंसा के योग्य हों। जिससे तुम्हारा अखण्डित बल और चक्रवर्तीराज्य स्थिर होकर दुष्ट शशत्रुओं का सदा पराजय होता रहे **(मा मर्त्यस्य0)** परन्तु यह मेरा आशीर्वाद केवल धर्मात्मा, न्यायकारी, और श्रेष्ठ मनुष्यों के लिए है और जो **(मायि0)** अर्थात् कपटी, छली, अन्यायकारी और दुष्ट मनुष्य हैं उसके लिये नहीं ,किन्तु ऐसे मनुष्यों का तो सदा पराजय ही होता रहेगा । इसलिये तुम लोग सदा धर्म कार्यों ही को करते रहो ।।

(इषे पिन्वस्व0) हे भगवन् ! **(इषे0)** हमारी शुभ कर्म करने ही की इच्छा हो और हमारे शरीरों को उत्तम अन्न से सदा पुष्टियुक्त रखिये **(उर्जे0)** अर्थात् अपनी कृपा से हमको सदा उत्तम पराक्रमयुक्त और दृढ़ प्रयत्न वाले कीजिये **(ब्रह्मणे0)** सत्यशास्त्र अर्थात् वेदविद्या के पढ़ने पढ़ाने और उससे यथावत् उपकार लेने में हमको अत्यन्त समर्थ कीजिये अर्थात् जिससे हम लोग उत्तम विद्यादि गुणों और कर्मों को करके ब्राह्मणवर्ण हों **(क्षत्राय0)** हे परमेश्वर! आपके अनुग्रह से हम लोग चक्रवर्तीराज्य और शूरवीर पुरूषों की सेना से युक्त हों कि क्षत्रियवर्ण के अधिकारी हमको कीजिये **(द्यावापृथिवी0)** जैसे पृथिवी, सूर्य, अग्नि, जल और वायु आदि पदार्थों से सब जगत् का प्रकाश और उपकार होता है, वैसे ही कला कौशल, विमान आदि यान चलाने के लिये हमको उत्तम सुखसहित कीजिये कि जिससे हम लोग सब सृष्टि के उपकार करने वाले हों **(धर्मासि0)** हे सुधर्मन् न्यायकरने हारे ईश्वर! आप न्यायकारी हैं, वैसे हमको भी न्यायकारी कीजिये **(अमे0)** हे भगवन्! जैसे आप निर्वैर होके सबसे वर्तते हो, वैसे ही सबसे वैररहित हमको भी कीजिये **(अम्मे)** हे परमकारूणिक ! हमारे लिये **(नृम्णानि0)** उत्तम राज्य, उत्तम धन और शुभगुण दीजिये । **(ब्रह्म0)** हे परमेश्वर! आप ब्राह्मणों को हमारे बीच में उत्तमविद्या युक्त कीजिये **(क्षत्रं0)** हमको अत्यन्त चतुर, शूरवीर और क्षत्रियवर्ण का अधिकारी कीजिये **(विशं0)** अर्थात् वैश्यवर्ण और हमारी प्रजा का रक्षण सदा कीजिये कि जिससे हम शुभ गुणवाले होकर अत्यन्त पुरूषार्थी हों ।।

(यज्जाग्रतो0) हे सर्वव्यापक जगदीश्वर! जैसे जाग्रत अवस्था में मेरा मन दूर दूर घूमने वाला, सब इन्द्रियों का स्वामी, तथा **(दैवं0)** ज्ञान आदि दिव्यगुण वाला और प्रकाशस्वरूप रहता है, वैसे ही **(तदु सु0)** निद्रा अवस्था में भी शुद्ध और आनन्दयुक्त रहे। **(ज्योतिषां0)** जो प्रकाश का भी प्रकाश करने वाला और एक है, **(तन्मे0)** हे परमेश्वर! ऐसा जो मेरा मन है सो आपकी कृपा से **(शिवसं0)** कल्याण करने वाला और शुद्धस्वभावयुक्त हो, जिससे अधर्म कामों में कभी प्रवृत्त न हो ।।

इसी प्रकार से **(वाजश्च मे0)** इत्यादि मन्त्र शुक्ल यजुर्वेद के अठाहरवें अध्याय में ईश्वर के अर्थ समर्पण करने के ही विधान में है अर्थात् सबसे उत्तम मोक्षसुख से लेके अन्न, जल पर्यन्त सब पदार्थों की याचना मनुष्यों को केवल ईश्वर ही से करनी चाहिये।

– "अथेश्वरस्तुतिप्रार्थनायाचनासमर्पणोपासनाविद्याविषय" , ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

ईशावास्यमिद ँ सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत् । तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ।। – यजु0 40 / 1 ।।
हे मनुष्य ! तू जो प्रकृति से लेकर पृथिवी पर्यन्त सब प्राप्त होने योग्य सृष्टि में चरप्राणिमात्र संपूर्ण ऐश्वर्य से युक्त सर्वशक्तिमान् परमात्मा से आच्छादन करने योग्य अर्थात् सब ओर से व्याप्त होने योग्य है, उस त्याग किये हुए जगत् से पदार्थों को भोगने का अनुभव कर, किन्तु किसी के भी वस्तुमात्र की अभिलाषा मत कर ।

ज्योतिषशास्त्र और देव

ज्योतिष शास्त्र के प्राप्त ग्रन्थों में सूर्य सिद्धान्त सर्वाधिक प्राचीन है। इस ग्रन्थ ने स्वयं अपना समय बताया है –

अल्पावशिष्टे तु कृते मयो नाम महासुरः ।
रहस्यं परमं पुण्यं जिज्ञासुज्ञानमुत्तमम् ।। – 1–2 ।।
वेदाङ्गमग्र्यमखिलं ज्योतिषां गतिकारणम् ।
आराधयन् विवस्वनं तपस्तेपे सुदुश्चरम् ।। – 3 ।।

कृत (सत्य) युग के कुछ भाग के शेष रहते सुप्रसिद्ध महान् असुर मय ने ग्रहों की गति आदि के बोध में कारण, नेत्ररूप श्रेष्ठ वेदाङग ज्योतिष के अतिश्रेष्ठ पुण्यमय, रहस्यपूर्ण, उत्तम ज्ञान की जिज्ञासा से विवस्वान् (सूर्य) की आराधना का कठोर तप किया । सम्पूर्ण त्रेता तथा द्वापर के 12,86000 + 8,64,000 कुल मिलाकर 21,60000 वर्ष होते हैं, कलिके 5116 वर्षयुक्त करने पर 21,65,116 वर्ष होते हैं । सत्य युग के 'अल्प' वर्षों को संख्या में न लें तो भी यह संख्या अत्यधिक बड़ी होने से ग्रहण करने योग्य नहीं लगती है। तो क्या इसे नहीं लिया जावे ? क्या यह उचित होगा कि इसे अमान्य कर हम अपने इस प्राचीन वाङ्.मय का तथा इसके प्रणेताओं का तिरस्कार कर वाङ्.मय को ही मिथ्या प्रमाणित कर दें ? यह एक ही स्थल नहीं है। ऋग्वेद का यह निम्न निर्दिष्ट मंत्र दीर्घतमा ऋषि के नौ युगों तक स्वस्थ शरीर को बताकर दशवें युग में वार्धक्य के चिह्न बताता है :–

" दीर्घतमा मामतेयो जुजुर्वान् दशमे युगे ।
अपामर्थं यतीनां ब्रह्मा भवति सारथिः ।। – 1.158.6 ।।

ममता पुत्र मामतेय नौ युग सम्पूर्ण सुख साधनों के तथा हृष्ट–पुष्ट स्वस्थ श्शरीर के साथ व्यतीत कर दशम युग में वृद्धावस्था के भाव प्राप्त करता है। यतियों के संयमपूर्ण कर्मों के लिए ब्रह्मा उनका सारथि होता है ।

रामायण में भगवान् राम जाम्बवान् को मैन्द, द्विविद तथा कुछ अन्य – इस प्रकार कुल पाँच वानरों के साथ कलियुग के प्राप्त होने तक जीवित रहने की आज्ञा देते हैं –

यावत् कलिश्च सम्प्राप्तस्तावज्जीवत सर्वदा ।
– उत्तरकाण्ड – 108 / 37 ।।

राम को यदि द्वापर के प्रारम्भ में ही मान लें तो कलि आने तक 8, 64000 वर्ष होते हैं। क्या जाम्बवान् आदि की इतनी दीर्घ आयु सम्भव है क्यों कि इनका निधन तो कलि और द्वापर की सन्धि में हुआ है अर्थात् द्वापर समाप्ति पर तथा कलि आने को है। प्रत्येक द्वापर में व्यास का जन्म होता है । एक द्वापर के पश्चात् दूसरा द्वापर (कलि 4,32,000; सत्य 1728000 तथा त्रेता 1286000 कुल) 3456000 वर्षों की पूर्ति पर आता है। व्यासों में शक्ति, पराशर, जातुकर्ण्य से कृष्ण द्वैपायन का सम्बन्ध पितामह, पिता, चाचा का है। क्या एक से दूसरे का जन्म साढ़े चौंतीस लाख वर्ष पश्चात् है , क्या यह सम्भव है? इतना ही नहीं भगवान् वाल्मीकि (24वें व्यास), शक्ति (25 वें व्यास) साथ–साथ हैं। वाल्मीकि, पाराशर, जातुकर्ण्य तथा कृष्णद्वैपायन (28 वें व्यास) द्वापर के अन्त में साथ–साथ हैं, यह सर्वथा असम्भव है। महाभारत में भगवान् कृष्णद्वैपायन का ही वर्णन है। क्या इसे असत्य मान लिया जावे ? कम से कम आत्मनिष्ठा सम्पन्न संस्कारित विद्वान् तो ऐसा नहीं करेगा । साथ ही यह भी निश्चित है कि वह इन कथनों को सर्वथा इसी रूप में स्वीकृत भी नहीं करेगा । निश्चित ही वह अनुसन्धान में प्रवृत्त होगा । इसके लिए व्यापक और गम्भीर स्वाध्याय की आवश्यकता है। आजकल दिनानुदिन स्वाध्याय का अभाव होता जा रहा है। इसका परिणाम है–मनमाने समाधान अथवा निर्णय दे देना । इससे वाङ्.मय की और भी हानि हो रही है।

इन सत्य त्रेता आदि नामों का सम्बन्ध केवल संख्या विशेष तक ही सीमित नहीं है । चरक संहिता शारीरस्थान में जैसे जगत् में सर्वत्र ब्राह्मी विभूति को ही बताया गया है। ऐसे ही पुरूष में भी आन्तरात्मि की विभूति बतायी गयी है, वहाँ इन सूत्र नामों का प्रयोग द्रष्टव्य है : –

यथा लोकस्य सर्गादिस्तथा पुरूषस्य गर्भाधानम्, यथा कृतयुगमेव बाल्यं, यथा त्रेता तथा यौवनम्, यथा द्वापरस्तथा स्थाविर्यम् यथा कलिरेवमातुर्यम्, यथा युगान्तस्तथा मरणम् इत्येव मनुभानेनानुक्तानामपि लोकपुरूषयोरवयव विशेषाणामग्निवेश सामान्यं विद्यात् ।।5/4 ।।

लोक का सर्ग (सृष्टि), पुरूष का गर्भाधान समान विभूति है । लोक में जैसे कृत (सत्य) युग वैसे ही पुरूष में बाल्यावस्था है। इसी तरह लोक का त्रेता, पुरूष का यौवन; लोक का द्वापर, पुरूष का बुढ़ापा; लोक का कलि, पुरूष का रोग समुदाय तथा जैसे लोक में युगान्त वैसे ही पुरूष का मरणभाव एक ही है। आधिदेव में जो लोक है, अध्यात्म में वही पुरूष है। चरक के इस प्रयोग से स्पष्ट है कि कृत, त्रेता, द्वापर तथा कलि लोक की विशेष अवस्थाओं के नाम हैं। ये ही नाम पुरूष (जीवात्मा, स्त्री, पुरूषरूप सभी प्रकार के प्राणिवर्ग) की शारीरिक वयोवस्था तथा आतुर के नाम हैं। इनका कालमान से कोई सम्बन्ध नहीं है।

ऐतरेय ब्राह्मण में साधारणतया 100 से अधिक ऋचाओं वाली गाथाओं का शुनःशेष का आख्यान है (तदेतत् पर ऋक्शतगाथं शौनःशेप आख्यानं इति – 33.6) । यहाँ इन्द्र हरिश्चन्द्र पुत्र रोहित को कहता है –

शतहस्त समाहर सहस्त्रहस्त सं किर । अथर्व0 3/24/5 ।। हे मनुष्य ! तुम सौ हाथों से कमाओ और हजार हाथों से दान करो।

कलिःशयानो भवति संजिहानस्तु द्वापरः । उत्तिष्ठँ स्त्रेता भवति कृतं सम्पद्यतेचरन् ।। चर एव 33/3 ।।

शयन (निद्रा) निद्रा का परित्याग, उठ पड़ना तथा चलना अर्थात् कर्तव्य कर्म में लग जाना ये मनुष्य की चार अवस्थाएँ उत्तरोत्तर श्रेष्ठ हैं। इन्हें ही क्रमशः कलि, द्वापर, त्रेता और कृत कहा है, इस श्रेष्ठतम से कभी वंचित न हों । अतः चलते रहना चाहिए अर्थात् कर्म तन्त्र में गतिशील रहना चाहिए यह इसका सार है। यहाँ भी कालमान नहीं है।

कितवों के हारजीत की बाजी लगाकर खेलने के अनेक प्रकार हैं, जो चलते– चलते भी रास्ते में शर्त लगाकर खेल लेते हैं। कुछ सभाओं में खेले जाते हैं । ये शासन के भी होते हैं और शासन की देखरेख में भी । यहाँ खेलने के कुछ पासे होते हैं , ये पाँच के समुदाय में होते हैं इनमें भी चार के नाम कृत, त्रेता, द्वापर और कलि होते हैं । वेदमन्त्रों में इनका विकीर्ण उल्लेख है। महाभारत सभा पर्व में तो इसका विस्तार से वर्णन है। पाशों के नाम होने से यहाँ भी कालमान नहीं है। क्या यह सब कुछ दृष्टि में रखकर मानव–इतिहास के सन्दर्भ में ज्योतिष के कालमान को लेना विचार की दुर्बलता नहीं बता रहा है?

–क्रमशः..........

– प्रो. अनन्त शर्मा, अध्यक्ष, साहित्य–संस्कृति पीठ,
राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर ।

योग की महिमा

योग ऋत है, सत् है, अमृत है।
योग बिना जीवन मृत है।
योग जोड़ है, वेदों का निचोड़ है।
योग में ही व्याप्त सूर्य नमस्कार बेजोड़ है।। 1।।
योग से मिटती हैं, आधियाँ व्याधियाँ।
योग से मिटती हैं त्वचा की कोढ़ आदि विकृतियाँ ।। 2 ।।
योग जीवन को जीने की जड़ी बूटी है।
योग ज्ञानामृत पीने की खुली हूई टूटी है।। 3 ।।
योग दर्शन है, मनन है, ध्यान है।
योग महर्षि पतंजलि का शोध है, वरदान है।। 4।।
योग ईश्वर से मिलने की परम सीढ़ी है।
जसको ऋषि मुनियों ने अपनाया पीढ़ी दर पीढ़ी है।। 5 ।।
योग गीत है, संगीत है, सरस वादन है।
योग बिन खर्चे का सबसे सस्ता साधन है।। 6 ।।
योग से ही होता है चरित्र निर्माण व बचती है संस्कृति ।
योग से ही बनते हैं संस्कार, विमल होती है चित्त वृत्ति ।। 7।।
योग आधार है गीता आदि ग्रन्थों का ।
योग आभार है सरल सौम्य भक्तों का ।। 8।।
योग तारण है, दुःख निवारण है।
हर बड़ी से बड़ी समस्या के समाधान का कारण है।। 9 ।।
योग में निहित है पूर्ण जीवन जीने की शक्ति ।
योग से ही होंगे ईश दर्शन बढ़ेगी राष्ट्रभक्ति ।। 10।।
रोग भोग मिटते हैं सब योग से ।
मोद प्रमोद विनोद होते हैं सब योग से ।। 11।।
योग उलझे हुए हर सवाल का जवाब है।
कंटीली झाड़ियों में महकता मुस्कराता प्रसन्नचित गुलाब है।।12।।
ज्ञानयोग, ध्यानयोग, कर्मयोग, सांख्ययोग, भक्ति योग सब
योग के प्रकार हैं।
योग की है महिमा भारी नमन बारम्बार है ।।13।।

– विमलेश बंसल, आर्या, नई दिल्ली

विख्यात विद्वान्
पं. गणपति शर्मा, चुरू (व्यक्ति विशेष)

शास्त्रार्थ महारथी, अद्वितीय वाग्मी तथा दार्शनिक पं. गणपति शर्मा का जन्म राजस्थान के चुरू नगर में 1930 विक्रमी (1873 ई.) में पाराशर गोत्रीय पारीक ब्राह्मण पं. भानीराम जी के यहाँ हुआ । पिता पं. भानीराम पौराहित्य के साथ–साथ वैद्यक का व्यवसाय भी करते थे । इनकी प्रारम्भिक शिक्षा चुरू में ही हुई । व्याकरण तथा साहित्य में आपने अच्छा नैपुण्य प्राप्त कर लिया । राजस्थान में आर्य समाज के महान् प्रचारक, महर्षि दयानन्द के प्रत्यक्ष शिष्य पं. कालूराम जी के उपदेशों से गणपति जी आर्य समाजी बने। 22 वर्ष की अवस्था में आपने आर्य समाज में प्रवेश किया । आपकी वाग्मिता तथा तर्कशक्ति का परिचय आर्य जनता को समय–समय पर मिलता रहा। ईश्वर सिद्धि तथा वेदों की अपौरूषेयता पर आपके व्याख्यान सहस्त्रों की उपस्थिति में सुने जाते थे। शास्त्रार्थों में उन्होंने अनेक पण्डितों, पादरियों तथा अन्य मतावलम्बियों को पराजित किया था। 39 वर्ष की अल्पायु में पं. गणपति शर्मा का 27 जून, 1912 को जगराब (पंजाब) में देहावसान हुआ । चुरू में लाल घण्टाघर के पास इन्द्रमणि पार्क के बीचों बीच लगी हुई इनकी प्रतिमा इनके योगदान का प्रचार स्वयं कर रहा है।

– रामगोपाल सैनी , फतेहपुर, सीकर

वितर्कबाधने प्रतिपक्षबाधनम् ।। योगदर्शनम् – 2/33।। यम–नियमों के पालन में वितर्कों द्वारा बाधा उपस्थित होने पर विरूद्ध पक्ष का विचार करना चाहिए। अर्थात् यम–नियमों के भंग होने से बहुत बड़ी हानि होती है ऐसा मानकर उन वितर्कों को रोक देना चाहिये ।

उपनिषद् एवं दर्शनशास्त्र अब वाट्स एप (What's App) पर भी

ऋषि उद्यान, अजमेर की ओर से उपनिषदों और दर्शनों की पहुँच अधिक सुगम बनाने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए ये सभी साहित्य वाट्स एप्प (What's App) पर नियमित रूप से उपलब्ध करवाने की व्यवस्था की गई है। इसके लिए "षड्.दर्शन" और " एकादशोपनिषद्" के नाम से दो ग्रुप बनाये गये हैं , जिन पर प्रतिदिन एक पोस्ट विषय से सम्बन्धित की जाती है और ग्रुप से जुड़े हुए सदस्यगण उससे सम्बन्धित प्रश्न भी पूछ सकते हैं। इसके अतिरिक्त नियमित रूप से 'योगदर्शन' और "ईशोपनिषद्" के एक एक एपिसोड का ऑडियो भी पोस्ट किया जाता है। अध्यात्म में, वैदिक वाङ्.मय में रूचि रखने वाले कोई भी जिज्ञासु इन ग्रुप में जुड़ सकते हैं। इससे जुड़ने के लिए 9314394421 पर सम्पर्क कर सकते हैं अथवा इस न. पर वाट्स एप सन्देश भेज सकते हैं।

आर्यवीर दल अजमेर द्वारा योग शिविर का आयोजन

अजमेर! आर्यवीर दल अजमेर की ओर से श्री मेहन्दीपूर बालाजी कोटडा धाम में दिनांक 4–7–15 से 8–1–15 तक पाँच दिवसीय निःशुल्क योग–प्राणायाम शिविर का आयोजन किया गया जिसमें कोटडा ग्रामवासियों ने सैकड़ों की संख्या में भाग लिया।

आर्य वीर दल अजमेर के शिक्षक श्री सुशील शर्मा व अभिषेक कुमावत ने ग्रामीणों को योग व प्राणायाम सिखाया। साथ ही आर्य समाज के सिद्धान्तों व नियम के बारे में बताया। उन्हे यज्ञ का महत्व भी समझाया। इसी बीच आर्य वीर दल अजमेर की और से युवाओं के लिए 1 दिवसीय विशेष सत्र हुआ जहाँ अभिषेक कुमावत जी ने युवाओं को स्वाध्याय व संध्या का महत्व बताया। युवाओं को ऋषि दयानन्द के चरित्र का उदाहरण देकर उन्हे अपना आर्दश बनाने कि प्रेरणा दी।

नवनिर्वाचित प्रबन्धकारिणी (अन्तरंग सभा)

क्रमांक	नाम पदाधिकारी	पद
1.	श्री विजयसिंह भाटी	प्रधान
2.	श्री सुधीर कुमार शर्मा	मंत्री
3.	श्री बलवन्त सिंह शास्त्री	कोषाध्यक्ष
4.	श्री अशोक कुमार शर्मा	पुस्तकालयाध्यक्ष
5.	श्री मदनलाल आर्य	उपप्रधान (अजमेर संभाग)
6.	श्री अर्जुनदेव चड्ढा	उपप्रधान (कोटा संभाग)
7.	श्री अमित आर्य	उपप्रधान (बीकानेर संभाग)
8.	श्री हरेन्द्र कुमार आर्य	उपप्रधान (जोधपुर संभाग)
9.	श्री ओमप्रकाश	उपप्रधान (उदयपुर संभाग)
10.	श्री ओमप्रकाश आर्य गुणसारा	उपप्रधान (भरतपुर संभाग)
11.	श्री जगदीश प्रसाद आर्य	उपप्रधान (जयपुर संभाग)
12.	श्री रमेश गोस्वामी	अन्तरंग सभा सदस्य
13.	श्री देवेन्द्र कुमार	अन्तरंग सभा सदस्य
14.	श्री बलवन्त कुमार आर्य	अन्तरंग सभा सदस्य
15.	श्री रमजीराम आर्य	अन्तरंग सभा सदस्य
16.	श्रीचन्द गुप्ता	अन्तरंग सभा सदस्य
17.	श्री दुर्गादास	अन्तरंग सभा सदस्य
18.	श्री अशोक कुमार आर्य	अन्तरंग सभा सदस्य
19.	श्री रमेश कुमार आर्य	अन्तरंग सभा सदस्य
20.	श्री आनन्द मोहन	अन्तरंग सभा सदस्य
21.	श्री हरिदत्त शर्मा	अन्तरंग सभा सदस्य
22.	श्री वेदप्रकाश आर्य	अन्तरंग सभा सदस्य
23.	श्री सुखलाल आर्य	अन्तरंग सभा सदस्य
24.	श्री किशनाराम आर्य	अन्तरंग सभा सदस्य
25.	श्री राजमल आर्य	अन्तरंग सभा सदस्य
26.	श्री मोतीलाल आर्य	अन्तरंग सभा सदस्य

अपरिग्रहस्थैर्ये जन्मकथन्तासम्बोधः ।। – योगदर्शनम् 2/39।।
अपरिग्रह की स्थिरता होने पर भूत, भविष्यत् तथा वर्तमान जन्म से सम्बन्धित जिज्ञासा और आनुमानिक ज्ञान हो जाता है।

बधाई सन्देश

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के चुनाव निर्विरोध सम्पन्न होने पर समस्त प्रान्त से विभिन्न आर्य समाजो, आर्य संगठनों, आर्य जनों के बधाई सन्देश प्राप्त हो रहे हैं। हम यहाँ उनमें से कुछ को प्रकाशित कर रहे हैं।

राजस्थान के समस्त आर्य समाजों की नियामक एवं नियन्त्रक संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के चुनाव निर्विरोध सम्पन्न होने पर नवनिर्वाचित समस्त कार्यकारिणी को आर्य वीर दल, राजस्थान प्रान्त की ओर से बहुत–बहुत बधाईयां । हमें आशा है कि प्रधान श्री विजयसिंह जी भाटी एवं मंत्री श्री सुधीर कुमार शर्मा जी के नेतृत्व में नवनिर्वाचित कार्यकारिणी पूर्ण उर्जा एवं उत्साह के साथ कार्य करते हुए आर्य समाजों को नयी गति एवं दिशा प्रदान करेंगी। तथा पिछले अनेक वर्षों से राजस्थान की आर्य समाजों में, आर्य जनों में नैराश्य का वातावरण बना हुआ था , वह समाप्त होकर नवीन उर्जा का संचार होगा ।

– भवदेव शास्त्री, प्रान्तीय मंत्री, आर्य वीर दल, राजस्थान प्रान्त
आर्य वीर दल, राजस्थान प्रान्त

आर्य समाजों की नियामक एवं नियन्त्रक संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के चुनाव निर्विरोध सम्पन्न हुए । इसमें राजस्थान की लगभग सभी आर्य समाजों का जो ऐक्य दिखाई दिया वह एक सुखद अनुभूति है। सर्वप्रथम तो इस कार्य को सफलतापूर्वक परिणाम तक पहुँचाने में योगदान देने वाले सभी आर्य जनों, कार्यकर्ताओं, समाजों आदि को मैं हृदय से धन्यवाद देता हूँ। इस चुनाव में सर्वसम्मति से प्रधान श्री विजयसिंह जी भाटी एवं मंत्री डॉ. सुधीर कुमार शर्मा जी के नेतृत्व में नवनिर्वाचित कार्यकारिणी को हार्दिक बधाई । हमारे अन्दर आशा का संचार हुआ है कि अब आर्य संगठन मजबूत होगा और वेदों का प्रचार–प्रसार तीव्र होगा । पुनः सभी का बधाई एवं शुभकामनाएं ।

– रामस्नेही जी आर्य, वेदप्रकाश जी आर्य, आर्य समाज धौलपुर

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के चुनाव में सर्वसम्मति से नवनिर्वाचित कार्यकारिणी को बहुत – बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं। हमें आशा है कि नवीन कार्यकारिणी आर्य समाज के प्रचार–प्रसार को तीव्र करने में और उन्हें मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी ।

–कर्मयोगी जी, आर्य समाज, सूरौता , भरतपुर

श्रीमान् विजय सिंह जी भाटी,
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
नमस्ते!

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि आपके पुनः निर्विरोध प्रधान पद पर एवं डॉ. सुधीर शर्मा जी के मंत्री पद पर चुने जाने की हार्दिक बधाई । आपका कार्यकाल पूर्व में भी अतिउत्तम रहा है, इसके लिये आपका कार्य सराहनीय है। आगे भी इसी प्रकार समाज को नयी दिशा एवं उर्जा प्रदान करेंगे ऐसी हमें आशा है।

– रामस्वरूप आर्य, प्रधान आर्य समाज, बांदीकुई,

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के निर्विरोध चुनाव सम्पन्न होने पर राजस्थान प्रदेश के आर्य जगत् के समस्त आर्य समाजों एवं आर्यों को इसकी शुभकामनाएं। एवं नवनियुक्त कार्यकारिणी, प्रधान जी, मन्त्री जी, कोषाध्यक्ष को आर्य समाज, जंचौली की ओर से बहुत–बहुत बधाई ।

–बलवीर जी आर्य , जंचौली

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्विरोध सम्पन्न हुए चुनाव में नवनिर्वाचित कार्यकारिणी के सभी निर्वाचित सभासदों को हार्दिक बधाई। आशा है कि नई कार्यकारिणी वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार के लिए पूरे मनोयोग से कार्य करेगी और संगठन को नवीन उर्जा एवं दिशा देने में अवश्य सफल होगी ।

– संदीपन जी आर्य, एसोसिएट प्रोफेसर,
राजकीय महाविद्यालय, लालसोट

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के निर्विरोध सम्पन्न हुए चुनाव में नवनिर्वाचित कार्यकारिणी के सभी निर्वाचित सभासदों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं ।

– लादूराम जी आर्य, मंत्री, आर्य समाज, डोरिया, भीलवाड़ा

आर्य समाज श्रीगंगानगर के चुनाव सम्पन्न

दिनांक 14 जून, 2015 को आर्य समाज श्रीगंगानगर के सभागार में हुई आम सभा में नवीन कार्यकारिणी के चुनाव की प्रक्रिया सम्पन्न हुई. । सर्वसम्मति से सम्पन्न हुए चुनाव में श्री शुद्धबोध जी शर्मा एवं श्री अशोक सहगल को संरक्षक चुना गया । श्री रवि प्रकाश को प्रधान, श्री रवि भटनागर एवं श्री सोहनलाल को उप–प्रधान, श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी को मंत्री, राजमल जी गोयल को सहमंत्री तथा कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा को चुना गया ।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः ।। यजु0 40/2 ।।
वेदोक्त शुभ कर्म करते हुए ही सौ और उससे भी अधिक वर्षों तक जीन की इच्छा करनी चाहिये।

बधाई सन्देश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का वार्षिक चुनाव सर्व सम्मति से सम्पन्न हुआ। प्रधान श्री विजय सिंह जी तथा मंत्री डा. सुधीर जी दोनों बधाई के पात्र है। सभा के पत्र आर्य मार्तण्ड का स्तर तथा सज्जा उन्नति के पथ पर है।

– डॉ. भवानी लाल भारतीय

अब तक तो ऐसा प्रतीत होता था कि आर्य समाज और विवाद एक दूसरे जन्मसाथी हैं, परन्तु आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के चुनावों का बिना किसी विवाद के निर्विरोध सम्पन्न होना इस बात का द्योतक है कि आर्य समाज अब एक नयी दिशा में नयी सोच के साथ पुनः आगे बढ़ रहा है। यह एक आशाजनक समाचार है। इस चुनाव में गठित नवीन कार्यकारिणी को मेरी ओर से बहुत–बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं । नवीन कार्यकारिणी से एक बात अवश्य कहना चाहूँगा कि राहें मुश्किल भरी हो सकती हैं, परन्तु सफलता का मार्ग प्रशस्त अवश्य है।

– ब्रह्मचारी सुरेन्द्र कुमार जी, व्यवस्थापक, दयानन्द माध्यमिक बाल विद्यालय, आर्य समाज भीलवाड़,ा

प्रतिक्रिया

आदरणीय सम्पादक जी!
आर्य मार्तण्ड,
आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
जयपुर ।

"आर्य मार्तण्ड" के नियमित प्रकाशन पर धन्यवाद । गत अंकों में ऐतिहासिक महापुरूषों, वीर, वीरांगनाओं के प्रेरणास्पद व्यक्तित्व के चित्रों को पत्रिका के मुख पृष्ठ पर छापने की अनूठी विधा बहुत अच्छी लगी और सराहनीय है। इसे आगामी अंकों में भी जारी रखें तो सतत् प्रेरणा मिलती रहेगी ।

'सम्पादकीय' निरन्तर नवीन व प्रेरणादायी बनता जा रहा है, एतदर्थ बहुत–बहुत धन्यवाद ।

साथ ही निवेदन है कि राजस्थान की सभी आर्य समाजों में आर्य मार्तण्ड यथा समय, यथा स्थान पहुंचे, यह सुनिश्चित किया जावे तो उत्तम रहेगा ।

– श्री मदनलाल आर्य, उपप्रधान (अजमेर संभाग)
आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

महान् क्रान्तिकारी अशफाक उल्ला खाँ के पौत्र ने आर्य मार्तण्ड को भिजवाया बधाई सन्देश।

भारतीय स्वंतत्रता संग्राम के अमर सेनानी अशफाक उल्ला खाँ के पौत्र श्री अशफाक उल्ला खान द्वारा आर्य मार्तण्ड का आभार व्यक्त किया गया। उनके द्वारा यह आभार आर्य मार्तण्ड के दिसम्बर, 2014 के अंक में मुख्य पृष्ठ पर प्रकाशित शहीद के चित्र, जीवन परिचय के लिए एवं सभा द्वारा शहीदों के प्रति कृतज्ञता अर्पित करने पर दिया गया। उन्होंने आर्य मार्तण्ड द्वारा इस प्रकार से अधिक से अधिक शहीदों को श्रृद्धांजली अर्पित कर उनके जीवन–चरित से जन सामान्य को परिचित करवाने की इस विधि की भी प्रशंसा की और निरन्तर जुडे रहने की बात कही। श्री अशफाक जी ने एक और महत्वपूर्ण जानकारी दी कि उनके पितामह शहीद अशफाक उल्ला खाँ जी की ये आखिरी इच्छा थी कि परिवार के किसी सदस्य का नाम उनके (शहीद के) नाम पर रखा जाये। इसलिए इस इच्छा को पूरी करने के उद्देश्य से श्री अशफाक जी का भी यही नाम (अशफाक उल्ला खान) रखा गया।

आगामी कार्यक्रम

- आर्य समाज, गंगापुर सिटी द्वारा 03 से 09 अगस्त, 2015 तक स्थानीय आर्य समाज भवन में श्री योगेन्द्र जी याज्ञिक, गुरूकुल होशंगावाद के सान्निध्य में " श्रावणी पर्व" कार्यक्रम का तीन सत्रों (प्रातः 8 से 11 बजेः यज्ञ, भजन, प्रवचन; दोपहर 2 से 4:30 बजे : भजन एवं प्रवचन; रात्रि 8 से 9:30 बजे : भजन एवं शंका –समाधान) में आयोजन ।
- 15 अगस्त, 2015 को पटेल मैदान, अजमेर के प्रातः 8.00 से होने वाले राजकीय कार्यक्रम में आर्य वीर दल की अजमेर इकाई द्वारा योग एवं व्यायाम आदि विधाओं की प्रस्तुति ।

अहिंसाप्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः ।। योगदर्शन –2/35।। अहिंसा का आचरण परिपक्व हो जाने पर उस योगी का सब प्राणियों के प्रति वैरभाव छूट जाता है और उसके उपदेश को समझने वाले और उसका आचरण करने वाले का भी अपने आचरण के अनुसार अन्य प्राणियों के प्रति वैरभाव छूट जाता है।

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / FN-221 / 2014-2016 / आर. एन. आई नं.10471/60

स्थापित : १९०८
रजिस्टर्ड : १९१४

।। ओ३म् ।।

Email : aryasabha@yahoo.com

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha

(International Arya League)

पंजीकृत कार्यालय :- महर्षि दयानन्द भवन, 3/5, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-110002

पत्र व्यवहार कार्यालय :- 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 टैलिफैक्स : 011-23360150, 23365959

संख्या 2015-16/383/सार्व. सभा — दिनांक 30 जून, 2015

प्रमाण-पत्र

(जहां आवश्यक हो)

प्रमाणित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, आदर्श नगर, जयपुर–302004 (राजस्थान), विश्व की आर्यसमाज की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली से विधिवत् सम्बन्धित है

उपरोक्त सभा का गत निर्वाचन दिनांक 2 जुलाई, 2013 को राजस्थान उच्च न्यायालय, जयपुर द्वारा केस सं. 68 / 2008 में दिए गए आदेश दिनांक 9 मई, 2013 की अनुपालना में जिला कलक्टर जयपुर ने अपने आदेश क्रमांक विधि / विविध / 2013 / 462–66 दिनांक 29 मई, 2013 को निर्वाचन अधिकारी के रूप में नियुक्त रिटर्निंग ऑफिसर–अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट जयपुर द्वारा सम्पन्न कराया गया था। इस निर्वाचन में आर्यसमाज के नियम–उपनियमों के आधार पर श्री विजय सिंह भाटी को प्रधान निर्वाचित किया गया था। उन्हीं के नेतृत्व में चुनी गई समिति को आगमी निर्वाचन वर्ष 2015 कराने का अधिकार था तथा इसी अधिकार के तहत दिनांक 17 जून, 2015 को आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, आदर्शनगर, जयपुर के निर्वाचन कराए गए, जिसमें प्रधान–श्री विजय सिंह भाटी, मन्त्री – श्री सुधीर कुमार शर्मा, एवं कोषाध्यक्ष – श्री बलवन्त सिंह निर्वाचित हुए हैं।

सभा को सूचना मिली है कि किसी ओम प्रकाश वर्मा द्वारा भी सभा के नाम से चुनाव कराकर हाई कोर्ट में निवेदन किया है। यह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के रिकार्ड, आर्यसमाज की नियमावली, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के नियमों के पूर्णतः विरुद्ध है। अतः श्री ओम प्रकाश वर्मा द्वारा की गई चुनाव कार्यवाही एव उन द्वारा चुनी गई कार्यकारिणी पूर्णतः अवैध, अवैधानिक एवं शून्य है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा इसे कोई मान्यता नहीं देती है, उन्हें राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम से कार्य करने का कोई अधिकार नहीं है।

(प्र[illegible])

मन्त्री, मो.09826655117

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित। मु. सम्पादक एवं प्रकाशक डॉ. सुधीर शर्मा, मंत्री–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रेषक:–
सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर–302004

यूको बैंक A/c No.:18830100010430 तिलक नगर, जयपुर

प्रेषित

विशेष – आर्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनमें सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।